MEDHĀMANTHAN ISSN : 3139-7840
A Premier Peer-Reviewed, Open-Access, Bimonthly, International Online Research Journal
Dedicated to the fields of Arts, Humanities and Social Sciences
Adhering to UGC Guidelines and Quality Mandates
Volume: 1, Issue: 2 (JUL - AUG) 2026

Buddhist Tradition in Yogic Thought

योग चिन्तन में बौद्ध परम्परा

Nityananda Das Adhikari

Research Scholar
Dr. C. V. Raman University, Bilaspur, Chhattisgarh, India.
Email: nityanandadasadhikari5@gmail.com
Page No: 125-138

Abstract: *Indian philosophy regards Yoga as an important path to liberation. Patañjali defines Yoga as "yogaś cittavṛttinirodhaḥ," the cessation of mental modifications through which the Seer abides in its true nature. Although Pātañjala Yoga is traditionally associated with Vedic and Upaniṣadic thought, certain philosophical concepts also invite comparison with Buddhist thought. The antiquity of yogic traditions may further be examined in relation to the Indus Valley Civilization. Buddhist sources preserve traditions of Buddhas preceding Gautama Buddha. Aśoka's Nigali Sagar inscription, Pāli texts such as the Buddhavaṃsa and Mahāpadāna Sutta, and evidence from Bharhut, Sanchi, Ajanta, and related traditions provide significant material concerning this succession of Buddhas. Against this historical background, the present study investigates possible continuities and interactions among ancient yogic, Buddhist, Vedic, and Pātañjala traditions and examines the contribution of Buddhist thought to the historical development of Yoga.*
Keywords: *Yoga, Buddhism, Tathāgata Buddha, Patañjali, Aśoka, Indus Valley Civilization.*

प्रस्तावना

प्रचलित धारणा में हम जानते हैं कि भारतीय दर्शनों में जो कुछ वेद का प्रमाण्य स्वीकार करते हैं, वे आस्तिक दर्शन हैं। जो वेद का प्रमाण्य स्वीकार नहीं करते हैं, वे नास्तिक दर्शन हैं। चार्वाक दर्शन, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन—ये तीन नास्तिक दर्शन प्रसिद्ध हैं। और आस्तिक दर्शन छः हैं—सांख्य दर्शन, योग दर्शन, न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा।

भारतीय दर्शनों में चार्वाक दर्शन के अतिरिक्त सभी दर्शन ही योग दर्शन के द्वारा प्रभावित हैं। इन सभी पर योग में प्रोक्त साधनोपायों का अनुसरण दिखाई देता है। अतः सभी दर्शन-प्रस्थानों में योग दर्शन ही प्राचीनतम है।

वेदों में वा वैदिक मंत्रों में योग के भावार्थ तथा योग-दर्शन से उनका संबंध स्पष्ट किया जाता है, जैसे ऋग्वेद में मन-बुद्धि के योग के बारे में कहा गया है—"युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपाश्चितः।"[1] अर्थात् ज्ञानी पुरुष अपने मन और बुद्धि को युक्त (संयमित) करते हैं। यहाँ मुनियों की योगावस्था का भी उल्लेख है—"मुनयो वातरशनाः..."[2] अर्थात् मुनि वायु को ही वस्त्र मानकर ध्यानावस्था में रहते हैं। यजुर्वेद में ध्यान और उपासना के बारे में उल्लेख है, जैसे—"मनसा देवमर्चयन्।" अर्थात् मन द्वारा ईश्वर की उपासना करना। यहाँ आत्मयोग का भी उल्लेख है—"यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः।" अर्थात् ज्ञानी के लिए सभी भूत आत्मरूप हो जाते हैं। उपनिषदों में भी योग का गुरुत्व प्रतिपादित है। महाभारत के शान्तिपर्व में कहा गया है—"नास्ति सांख्यं समं ज्ञानं नास्ति योगसमं बलम्।"[3] उपनिषदों में हमें योग के विषय में उक्तियाँ मिलती हैं, जैसे—"यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानमात्मनि। ज्ञानमात्मनि महति तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि।"[4] यह उपनिषद् नचिकेता और यम के संवाद के रूप में प्रचलित है और आत्मज्ञान तथा ध्यानयोग के मार्ग को उजागर करता है। इसमें योग की संज्ञा में कहा गया है—"तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्। अप्रमत्तस्तदा भवति योगो हि प्रभवाप्ययौ॥"[5] अर्थात् इन्द्रियों की स्थिर एवं दृढ़ धारणा को ही योग कहा जाता है। उस अवस्था में साधक अप्रमत्त होता है, क्योंकि योग का उद्भव और लय होता है। यहाँ ध्यान-योग की व्यावहारिक विधि का भी वर्णन है— "त्रिरुन्नतं स्थाप्य समं शरीरं हृदीन्द्रियाणि मनसा सन्निवेश्य। ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत विद्वान् स्रोतांसि सर्वाणि भयानकानि।"[6] इत्यादि श्रुतियों में योग के विषय में सुगम्भीर आलोचना प्रकाशित है।

आचार्य याज्ञवल्क्य द्वारा कहा गया है—"हिरण्यगर्भो योगस्य वक्ता नान्यः पुरातनः।"[7] श्वेताश्वतर उपनिषद् के द्वितीय अध्याय[8] में योग के आसन, प्राण, ध्यान और योग-साधना का क्रमबद्ध वर्णन है। बाद में शाण्डिल्योपनिषद्, योगराजोपनिषद्, हंसोपनिषद्, नादबिन्दूपनिषद्, ध्यानबिन्दूपनिषद्, योगकुण्डल्युपनिषद् इत्यादि अर्वाचीन उपनिषदों में भी योग की आलोचना की गई है। परन्तु पृथक् दर्शन के रूप में योग का उपस्थापन पतञ्जलि के द्वारा स्वरचित योगसूत्र द्वारा विहित है। पतञ्जलि प्रणीत योगसूत्र के अन्तर्गत ही योग-दर्शन का प्रपञ्च अब दिखाई देता है। यह पतञ्जलि व्याकरण-महाभाष्यकार पतञ्जलि से भिन्न नहीं हैं, ऐसा सम्प्रदाय का मत है। इसीलिए एक परम्परागत वचन है—

"योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि।।"

यह मत स्वीकृत है कि पतञ्जलि ईसा पूर्व द्वितीय-तृतीय शताब्दी में हुए, ऐसा कहा जा सकता है। वैदिक काल ईसा पूर्व 1500–1000 तथा सिन्धुघाटी का समयकाल ईसा पूर्व 2600 अनुमानित है।

मूलपाठ

भारतीय परम्परा को हम जब दूसरी दृष्टि से देखेंगे, तो पहले इतिहासकारों को मानना है कि, तथागत बुद्ध से पहले भी कोई बुद्ध थे या नहीं? इतिहासकारों को इस पर विचार करना चाहिए। क्योंकि इतिहासकार सम्राट अशोक के स्तम्भों के आधार पर भारत का इतिहास लिखते हैं। हम देखेंगे कि, सम्राट अशोक ने पूरी एक टीम बनाई थी।[9] यह बात ह्वेनसांग ने अपनी डायरी में लिखी है कि तथागत बुद्ध की खोज के लिए बाकायदा सम्राट अशोक की एक टीम थी। शोधकर्ताओं के रूप में वह टीम जाँच करके खोज करती थी कि कहाँ क्या है और क्या नहीं है; सम्राट अशोक की भी एक सीमा थी। उस सीमा के अन्तर्गत उन्होंने कुछ पुराने, पहले के बुद्ध स्तूपों की भी खोज कराई थी।[10] यह इतिहास गवाह है कि सम्राट अशोक ने न केवल तथागत बुद्ध के, बल्कि तथागत बुद्ध से पहले के बुद्धों के स्तूपों की भी खोज कराई थी।[11] साथ ही बुद्ध को कहाँ ज्ञान मिला,[12] उन्होंने कहाँ ज्ञान दिया,[13] और वे कहाँ-कहाँ गए[14]—हर स्थान पर सम्राट अशोक ने स्तूप बनवाए और स्तम्भ स्थापित कराए, ताकि हजारों वर्ष बाद भी[15] जनता जान सके कि तथागत बुद्ध यहाँ आए थे। चाहे लुम्बिनी, जहाँ तथागत बुद्ध का जन्म हुआ था, अथवा संबोधि स्थल बोधगया, जहाँ बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।[16] वह गाँव, जहाँ सुजाता ने तथागत बुद्ध को क्षीर खिलाया था[17]—बकरौर, जिसे पालि साहित्य में सेनानी ग्राम कहा गया है—वहाँ तथा कुशीनगर[18] में, हर स्थान पर सम्राट अशोक ने तथागत बुद्ध से जुड़े स्थलों पर स्तूप बनवाए थे और स्तम्भ स्थापित कराए थे। यदि सम्राट अशोक ने स्तूप नहीं बनवाए होते और स्तम्भ स्थापित नहीं कराए होते, तो कनिंघम यह नहीं खोज पाते कि कहाँ है सारनाथ, कहाँ है बोधगया, कहाँ है लुम्बिनी,[19] और कहाँ है श्रावस्ती का जेतवन;[20] क्योंकि इतिहासकारों की खुदाई में अशोक के ही स्तूप और स्तम्भ प्राप्त हुए।

फाहियान और ह्वेनसांग की डायरी के आधार पर कनिंघम ने प्राचीन बौद्ध स्थलों की खोज की, किन्तु फाहियान और ह्वेनसांग को भी सम्राट अशोक के उन्हीं स्तूपों और स्तम्भों के माध्यम से जानकारी प्राप्त हुई कि कहाँ सारनाथ, बोधगया, कौशाम्बी, कुशीनगर आदि स्थान हैं। सम्राट अशोक ने केवल तथागत बुद्ध से जुडे स्थलों की ही नहीं, बल्कि तथागत बुद्ध से पहले जो बुद्ध हुए, उनके भी स्थलों की खोज कराई थी।

क्योंकि वर्तमान नेपाल के गोटीहवा में ककुसंध (कपुसन) बुद्ध की स्मृति में सम्राट अशोक ने वहाँ एक स्तम्भ खड़ा करवाया था। यह सम्राट अशोक का स्तम्भ है—यह कैसे पता चलता है? क्योंकि स्तम्भ टूटा हुआ है और इसकी ऊँचाई लगभग सवा तीन मीटर है। इसके घेरे का भी एक मानक है; सम्राट अशोक के स्तम्भों का व्यास एक निश्चित मानक के अनुसार होता है, तथा पत्थर की चिकनाई से भी यह ज्ञात होता है कि यह अशोक का स्तम्भ है।

यहाँ पर एक स्तूप भी था। कनिंघम ने उस स्तूप का पता लगा लिया था और अपनी रिपोर्ट में उसका घेरा भी लिखा है। उसी स्तूप से चारकोल प्राप्त हुए हैं। उस चारकोल को अमेरिका के मियामी लैब में भेजा गया था, ताकि ककुसंध बुद्ध का काल निर्धारित किया जा सके। उस चारकोल की रिपोर्ट 800 ईसा पूर्व की आई। अर्थात् ककुसंध बुद्ध तथागत बुद्ध से पहले के हैं।

यह केवल बातें नहीं हैं, क्योंकि आज के वैज्ञानिक युग में इतिहास प्रमाण माँगता है, और ये प्रमाण अशोक के स्तूपों और स्तम्भों के लेखों से मिलते हैं। गोटीहवा,[21] [22]निगलीहवा[23] और लुम्बिनी[24]—इन तीनों स्थानों पर सम्राट अशोक के स्तम्भ आज भी हैं। आधुनिक काल में जो खोज हुई, वहाँ के स्तम्भों पर स्पष्ट लिखा है कि यहाँ शाक्यमुनि बुद्ध का जन्म हुआ था। यह भी सम्राट अशोक ने ही लिखवाया था।[25]

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि सम्राट अशोक ने केवल तथागत बुद्ध से जुड़े स्थलों की ही खोज नहीं कराई थी, बल्कि अन्य बुद्धों के स्थलों की भी खोज कराई थी। नेपाल में जो निगलीहवा, या निगालीसागर, या निगलीगाँव है, जहाँ कोणागमन[26] [27] बुद्ध का जन्मस्थान[28] माना जाता है, वहाँ पर भी सम्राट अशोक का स्तम्भ आज भी है। वह खड़ा नहीं है, बल्कि लेटा हुआ है, क्योंकि वह टूट गया है। उसमें सम्राट अशोक के स्तम्भों की वही चमक, वही ऊँचाई और वही व्यास है। अतः वह किसी अन्य का नहीं, बल्कि सम्राट अशोक का ही स्तम्भ है। संयोगवश उस पर कोणागमन बुद्ध का नाम भी लिखा हुआ है।

हालाँकि नाम में कुछ अन्तर है—वहाँ 'कणाकमनस' बुद्ध लिखा हुआ है—और वहाँ एक स्तूप भी था।[29] एक ओर शाक्यमुनि बुद्ध के जन्मस्थल पर स्तम्भ खड़े करवाए गए और स्तूप बनवाए गए[30], और उनके पहले जो बुद्ध हुए, जैसे कोणागमन बुद्ध, उनके लिए भी स्तम्भ बनवाए गए। यह स्तम्भ आज भी विद्यमान हैं। इसी प्रकार ककुसंध बुद्ध के लिए गोटीहवा में भी सम्राट अशोक का स्तम्भ है।[31] [32]

अब निगलीहवा में पहले से बना हुआ एक स्तूप है, जो कोणागमन बुद्ध के जन्मस्थान से सम्बन्धित है। उस पर यह भी लिखा हुआ है कि इस स्तूप का विस्तार कराया गया।[33] इसका अर्थ है कि वह स्तूप सम्राट अशोक से पहले ही निर्मित था। वह बुद्ध और स्तूप का इतिहास पुराना है। इतिहासकार जिस वैदिक सभ्यता और संस्कृति की बात करते हैं, वहाँ ऋग्वेद में भी बुद्ध,[34] बुद्ध की स्तुति,[35] सप्त बुद्ध[36] का उल्लेख एवं स्तूप[37] का वर्णन मिलता है। वहाँ तो एक 'हिरण्यस्तूप'[38] ऋषि का भी उल्लेख है। यहाँ प्रश्न उठता है कि स्तूप शब्द कहाँ से आया! जब स्तूप का इतिहास बाद का माना जाता है, तो ऋग्वेद में स्तूप का वर्णन कैसे है!

फिर आते हैं ककुसंध बुद्ध पर—गोटीहवा में वहाँ सम्राट अशोक का स्तम्भ आज भी है। यह स्तम्भ टूटा हुआ है, लगभग चार मीटर ऊँचा है, और उसका व्यास वही है जो सम्राट अशोक के स्तम्भों का होता है। वहाँ से प्राप्त चारकोल की जाँच अमेरिका के मियामी में की गई, जो एक समृद्ध प्रयोगशाला है। उस कार्बन-डेटिंग की रिपोर्ट 800 ईसा पूर्व[39] की आई।

वहाँ से एक हिसाब स्पष्ट होता है कि यदि तथागत बुद्ध ईसा पूर्व छठी शताब्दी में थे, तो सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व में कश्यप (कस्सप) बुद्ध, आठवीं में कोणागमन बुद्ध और ईसा पूर्व नौवीं शताब्दी में ककुसंध बुद्ध थे। वह रिपोर्ट की बात आकर मेल भी खाती है।

अतः यहाँ सम्राट अशोक के तीनों स्तम्भों की चर्चा हुई है—एक शाक्यमुनि बुद्ध के नाम पर लुम्बिनी में, दूसरा कोणागमन बुद्ध के नाम पर निगलीहवा में, और तीसरा ककुसंध बुद्ध के नाम पर गोटीहवा में।

इन स्तम्भों को लोग 'लौर' भी कहते थे। तेलुगु में 'बुंग', भोजपुरी में 'लौर' अर्थात् डण्डा। इसी के आधार पर उत्तरी बिहार में जो दो अशोक स्तम्भ हैं—लौरिया-नन्दनगढ़[40] और लौरिया-आरेराज[41]—उनमें 'लौरिया' शब्द जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार नेपाल में जो तिलौराकोट है, उसमें 'तिलौरा' का अर्थ तीन लौर अर्थात् स्तम्भ है—जैसे लुम्बिनी[42] का, निगलीहवा[43] का और गोटीहवा[44] का।

ये सभी पुरातात्त्विक प्रमाण इतिहास में उपलब्ध हैं, जिससे यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बौद्धों की परम्परा रही है,[45] जैसे सिख धर्म में दस गुरुओं की परम्परा रही है। मेडिकल हिस्ट्री पढ़ते समय इस बात को स्वीकार किया जाता है कि सिख धर्म में दस गुरु हुए। साथ ही आज भी तिब्बत में लामा की परम्परा है। इसलिए बौद्ध परम्परा में यदि 28 बुद्ध हुए, जैसे—

1.Taṇhaṅkara Buddha (तण्हंकर बुद्ध),

2.Medhaṅkara Buddha (मेधंकर बुद्ध),

MEDHĀMANTHAN ISSN : 3139-7840
A Premier Peer-Reviewed, Open-Access, Bimonthly, International Online Research Journal
Dedicated to the fields of Arts, Humanities and Social Sciences
Adhering to UGC Guidelines and Quality Mandates
Volume: 1, Issue: 2 (JUL - AUG) 2026

3.Saraṅkara Buddha (सरणंकर बुद्ध),
4.Dīpankara Buddha (दीपंकर बुद्ध),
5.Kondañña Buddha (कोण्डञ्ञ बुद्ध),
6.Maṅgala Buddha (मङ्गल बुद्ध),
7.Sumana Buddha (सुमन बुद्ध),
8.Revata Buddha (रेवत बुद्ध),
9.Sobhita Buddha (सोभित बुद्ध),
10.Anomadassī Buddha (अनोमदस्सी बुद्ध),
11.Paduma Buddha (पदुम बुद्ध),
12.Nārada Buddha (नारद बुद्ध),
13.Padumuttara Buddha (पदुमुत्तर बुद्ध),
14.Sumedha Buddha (सुमेध बुद्ध),
15.Sujāta Buddha (सुजात बुद्ध),
16.Piyadassī Buddha (पियदस्सी बुद्ध),
17.Atthadassī Buddha (अत्थदस्सी बुद्ध),
18.Dhammadassī Buddha (धम्मदस्सी बुद्ध),
19.Siddhattha Buddha (सिद्धत्थ बुद्ध),
20.Tissa Buddha (तिस्स बुद्ध),
21.Phussa Buddha (फुस्स बुद्ध),
22.Vipassī Buddha (विपस्सी बुद्ध),
23.Sikhī Buddha (सिखी बुद्ध),
24.Vessabhū Buddha (वेस्सभू बुद्ध),
25.Kakusandha Buddha (ककुसंध बुद्ध),
26.Koṇāgamana Buddha (कोणागमन बुद्ध),
27.Kassapa Buddha (कस्सप बुद्ध),
28.Gotama Buddha (गोतम बुद्ध)।

फिर इसे कैलकुलेट करने से दिखाई देगा कि ईसा पूर्व छठी शताब्दी में तथागत बुद्ध हुए, तो उसी के अनुसार चलने पर सातवीं–आठवीं शताब्दी में कस्सप बुद्ध, कोणागमन बुद्ध और ककुसंध बुद्ध का समय निर्धारित होगा, और यह क्रम आठवीं–नवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक चला जाएगा। फिर वहाँ से पीछे 28 बुद्धों तक जाने पर वह क्रम सिन्धुघाटी सभ्यता के समयकाल से जुड़ जाएगा।

जब हम सिन्धुघाटी सभ्यता का अध्ययन करते हैं, तो दिखाई देता है कि बहुत-से बर्तनों पर (चित्र–1) तथा मुहरों (सील) पर (चित्र–2) पीपल के पत्ते अंकित हैं। वहाँ के कुएँ भी पीपल के आकार में बने हुए हैं (चित्र–3)।

जैसे तथागत बुद्ध, शाक्यमुनि बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग के आधार पर श्रावस्ती, बोधगया आदि अनेक स्थानों पर अष्टकोणीय कुएँ बने हुए हैं (चित्र–4)। उसी प्रकार सिन्धु सभ्यता में भी पीपल के आकार के कुएँ मिलते हैं। सिन्धुघाटी सभ्यता में कुल

मिलाकर लगभग 700 के आसपास कुएँ प्राप्त हुए हैं, जिनमें पीपल-आकृति के कुएँ भी सम्मिलित हैं। पीपल वृक्ष की महिमा वहाँ अभूतपूर्व है; पीपल के पत्तों का महत्त्व इतना अधिक था कि उन्हें प्राप्त करने के लिए होड़-सी मची रहती थी (चित्र–5)। इस प्रकार के शिल्पांकन भी सिन्धु सभ्यता की खुदाई में प्राप्त होते हैं।

इन 28 बुद्धों में दो बुद्ध ऐसे हुए जिनका बोधिवृक्ष पीपल है—एक तथागत बुद्ध और दूसरे दीपंकर बुद्ध (चित्र–6)। दीपंकर बुद्ध[46] पीछे से चौथे बुद्ध थे और तथागत बुद्ध 28वें बुद्ध थे। वही दीपंकर बुद्ध का काल गणना करने पर सिन्धुघाटी सभ्यता के काल में पहुँचना पड़ेगा, और दीपंकर बुद्ध का जो समय है, वह लगभग 2000 ईसा पूर्व से 2100 ईसा पूर्व के बीच माना जाएगा। पीपल के पत्तों के जो चिन्ह मिलते हैं—जैसे बर्तनों पर, मुहरों (सील) पर—साथ ही बहुत-से लोग उन्हें अपने माथे पर लगाए हुए दिखते हैं, तो वह दीपंकर बुद्ध का प्रभाव माना जाता है। क्योंकि दो बुद्धों का बोधिवृक्ष पीपल था—एक तथागत बुद्ध का, और दूसरे दीपंकर बुद्ध का; और तथागत बुद्ध सिन्धुघाटी सभ्यता के समय में नहीं हुए थे, तो सिन्धुघाटी में पीपल इतना पवित्र क्यों था? वह दीपंकर बुद्ध के कारण था। दीपंकर बुद्ध का प्रभाव इतना व्यापक था कि पूरी सिन्धुघाटी सभ्यता पीपल के पत्तों के प्रतीकों से परिपूर्ण दिखाई देती है।

और जो लोग कहते हैं कि सिन्धु सभ्यता का सर्वनाश हो गया, मोहनजोदड़ो समाप्त हो गया, परन्तु आज भी वहाँ हजारों की संख्या में सिक्के मिलते जा रहे हैं।[47] मोहनजोदड़ो में अभी भी तीन-चार हजार कुषाणकालीन सिक्के प्राप्त हुए हैं। दीबर में भी कुषाणकाल के गड़े हुए सैकड़ों सिक्के मिले हैं (चित्र–7)। अभी हाल ही में मोहनजोदड़ो के स्तूप-क्षेत्र से ताँबे के घड़ों में भरे हुए सिक्के मिले हैं, जो कुषाणकाल के हैं। यहाँ से आर. डी. बनर्जी को 2170, जॉन मार्शल को 1100 और मैके को 1078 सिक्के 1922–1931 के दौरान प्राप्त हो चुके हैं। ये सिक्के कुषाण वंश के बौद्ध राजाओं द्वारा जारी किए गए हैं। इन सिक्कों की समय-सीमा लगभग 300 वर्षों की है। यदि पुरातत्त्व पर विश्वास करें, तो मोहनजोदड़ो का स्तूप-क्षेत्र 300 वर्षों तक बौद्ध गतिविधियों से सक्रिय रहा है।

इतिहासकार 1750–1500 ईसा पूर्व के आसपास सिन्धु घाटी सभ्यता में भयंकर विनाश की बात करते हैं, परन्तु उसके बाद उसे पुनर्जीवित नहीं करते, बल्कि सदा के लिए 'मृतकों का टीला' घोषित कर देते हैं। तब प्रश्न उठता है कि 300 वर्षों तक मोहनजोदड़ो बौद्धों का केन्द्र कैसे रहा?

अर्थात् कुषाणकाल में मोहनजोदड़ो में मेला लगता था, अथवा वहाँ इतने सिक्के कहाँ से आए? वे कौन लोग थे जो मोहनजोदड़ो जाया करते थे, जहाँ वह स्तूप स्थित है? यदि सिन्धु सभ्यता उसी समय समाप्त हो गई थी, तो इतने बौद्ध लोग वहाँ क्या करने जाते थे? वहाँ बौद्धों का मेला क्यों लगता था? यह तो प्रमाणित है कि कुषाण वंश के लोग बौद्ध थे।

अभी तो मोहनजोदड़ो में बुद्ध का एक पेंडेंट भी प्राप्त हुआ है (चित्र–8)।[48] यह मोहनजोदड़ो से प्राप्त बुद्ध-पेंडेंट धातु का बना हुआ है। इसका कार्बन-डेटिंग नहीं किया जा सकता है। कम से कम यदि जानकारी न हो, तो मौन रहना चाहिए।

कार्बन-डेटिंग केवल उन्हीं वस्तुओं की होती है, जिनमें कार्बन होता है, जैसे—हड्डी, लकड़ी, चारकोल आदि। इसलिए प्रत्येक वस्तु का इतिहास जानने के लिए अलग-अलग विधियाँ होती हैं। प्रत्येक वस्तु के इतिहास-निर्धारण के लिए भिन्न-भिन्न तरीके अपनाए जाते हैं।

तो वह जो गरिमा थी दीपंकर बुद्ध की, उनकी पूजा वहाँ होती थी। फाहियान ने लिखा है कि दीपंकर बुद्ध का पुष्पार्पण नागार क्षेत्र में बहु-चर्चित था,[49] और यह नागार क्षेत्र सिन्धु सभ्यता में है।[50]

हमारे यहाँ जो गड़बड़ी हो रही है, वह यह है कि इतिहासकार बुद्ध से पहले के बुद्धों को मानते ही नहीं हैं कि तथागत बुद्ध से पहले भी बुद्ध हुए थे। जब तक इस बात को नहीं माना जाएगा, तब तक इतिहास कभी भी प्रमाण के आधार पर सीधा नहीं होगा। और तथागत बुद्ध से पहले अन्य सभी बुद्धों को न मानने का दुष्परिणाम यह हुआ कि भारत में जितने भी स्तूप मिलते हैं, उन्हें हम मौर्यकाल और कुषाणकाल में रख देते हैं। क्योंकि गुप्तकाल में बौद्ध स्तूपों के स्थान पर मन्दिर बनने लगे,[51] इसलिए इतिहासकारों को स्तूपों को रखने का समय केवल मौर्यकाल और कुषाणकाल में ही मिल रहा है।

MEDHĀMANTHAN ISSN : 3139-7840
A Premier Peer-Reviewed, Open-Access, Bimonthly, International Online Research Journal
Dedicated to the fields of Arts, Humanities and Social Sciences
Adhering to UGC Guidelines and Quality Mandates
Volume: 1, Issue: 2 (JUL - AUG) 2026

वे स्तूप नाना प्रकार से बने हैं—जैसे मिट्टी के, ईंट के, पत्थर के—और साथ ही अनेक आकार-प्रकार के भी हैं। अभी तो 'धनचक्र' प्रकार के स्तूप की चर्चा ही नहीं होती है, जिसमें तीलियाँ बनी होती हैं, जो पंजाब के संहल में मिलते हैं (चित्र–9)। इनमें कहीं बत्तीस तीलियाँ हैं (चित्र–10), तो कहीं आठ तीलियाँ हैं (चित्र–11)। वे वृत्ताकार या गोलाकार होते हैं। किन्तु मौर्यकाल में निर्मित साँची, भरहुत और सारनाथ के स्तूपों का निर्माण अलग प्रकार का है।

सिन्धु सभ्यता के महत्त्वपूर्ण स्थल धोलावीरा में भी यही धनचक्र प्रकार का स्तूप मिलता है (चित्र–12)। धोलावीरा के उस धनचक्र-प्रकार के स्तूप में तीलियाँ छह हैं (चित्र–13)।

अतः जब हम सिन्धु सभ्यता की लिपि (स्क्रिप्ट) का अध्ययन करते हैं, तो यह देखते हैं कि जहाँ-जहाँ वृत्त बना है, वहाँ-वहाँ छह तीलियाँ हैं, और छह के अतिरिक्त सात तीलियाँ नहीं हैं (चित्र–14)। सिन्धु सभ्यता में जितने भी लिपि-चिह्न हैं, उन सभी में छह ही तीलियाँ मिलती हैं। यह सब अचानक नहीं है।

मोहनजोदड़ो का जो स्तूप है, उसे हमारे देश के इतिहासकार कुषाणकाल का बताते हैं, क्योंकि उनके मन में यह धारणा अभी भी है कि शाक्यमुनि बुद्ध से पहले कोई बुद्ध नहीं थे। यही कारण है कि मोहनजोदड़ो के स्तूप को इतिहासकार कुषाणकाल का मानते हैं। अब इतिहासकारों को स्थान कहाँ मिल रहा है—उसे तो कुषाणकाल में ही रखना है। वे यह स्वीकार ही नहीं कर सकते कि अन्य भी बुद्ध हुए थे।

यहाँ यह विचार करना आवश्यक है कि यदि मोहनजोदड़ो का स्तूप तथागत बुद्ध के समय के बाद बना होता, तो उस पर तथागत बुद्ध की मूर्तियाँ मिलतीं। कुषाणकाल में बने जितने भी स्तूप हैं, उन पर तथागत बुद्ध की मूर्तियाँ, अनेक प्रतीक-चिह्न, पदचिह्न तथा पद्म आदि बने हुए मिलते हैं। इसके लिए इतिहास में कुषाणकाल प्रसिद्ध है। क्या मोहनजोदड़ो के स्तूप पर ऐसे चिह्न हैं? क्या वहाँ बोधिवृक्ष है? नहीं है। किन्तु ऐसा क्यों नहीं है? कारण यही है कि वह स्तूप तथागत बुद्ध से पहले के किसी बुद्ध का है।

अमेरिका की एक विज्ञान-पत्रिका ने इस विषय पर बाकायदा रिपोर्ट प्रकाशित की है कि उस स्तूप की ईंटें तथा उसके भीतर प्राप्त सामग्री सभी सिन्धुघाटी सभ्यता के समय की हैं (चित्र–15)। अतः अब उस स्तूप को यह मानना ही पड़ेगा कि वह सिन्धु सभ्यता के दौरान का है, न कि कुषाणकाल का।

अब प्रश्न उठता है कि कुषाणकालीन परम्परा उससे कैसे जुड़ गई? इसका कारण यह है कि वहाँ कुषाणकाल के सिक्के मिल गए। किन्तु मोहनजोदड़ो के स्तूप का उन सिक्कों से क्या सम्बन्ध है? जर्मनी और इटली के पुरातत्त्वविदों ने लिखा है कि कुषाणकालीन सिक्कों का मोहनजोदड़ो के स्तूप से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है; दोनों अलग-अलग वस्तुएँ हैं। मोहनजोदड़ो का स्तूप सिन्धु सभ्यता का है, और सिक्के कुषाणकाल के हैं।

इस विषय पर आईएएस स्वपन कुमार विश्वास ने भी पुस्तक लिखी है कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नगरों का जो 'धम्म' है, वह बौद्ध धम्म है। किन्तु हमारे यहाँ इतिहास में वैदिक संस्कृति के एक पृथक् काल की चर्चा की जाती है।

सिन्धु सभ्यता की खुदाई से प्राप्त जिस मूर्ति को हम 'पुरोहित-राजा' की मूर्ति कहते हैं, वह नाम वास्तव में दो शब्दों को जोड़कर दिया गया है। वह मूर्ति बहुत ऊँची नहीं है, बल्कि अपेक्षाकृत छोटी है, किन्तु उससे अनेक बातें स्पष्ट होती हैं।

वह 'पुरोहित-राजा' की मूर्ति कैसी है—इस पर भी ध्यान देना चाहिए। उसकी आँखें अर्ध-उन्मीलित हैं, जो योग-मुद्रा को दर्शाती हैं। मूर्ति का वस्त्र-विन्यास भी ऐसा है कि जैसे तथागत बुद्ध का दाहिना हाथ कार्य के लिए मुक्त रहता था। यह श्रमण परम्परा है, जो श्रम पर आधारित है, और बाएँ कंधे पर वह मूर्ति वस्त्र धारण किए हुए है। यही शैली तथागत बुद्ध की भी है। परम्परा कहीं से थोड़ी ही मिटती है (चित्र–16)!

यदि हम तुलना करके देखें, तो सिन्धु सभ्यता की लिपि और बहुत-सी संस्कृतियाँ मौर्यकाल से होते हुए आज तक चली आ रही हैं। उनका प्रभाव निरन्तर बना हुआ है। आगे हम पीपल-पत्र के संदर्भ को देख चुके हैं, अब हम यह देखेंगे कि सिन्धुघाटी सभ्यता के बर्तनों पर जो सिंह का चित्र मिलता है, वह ठीक सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्तम्भों पर बने सिंह के समान है। वह

सिंह मुख-विस्तार के साथ जिस प्रकार बैठा हुआ है, ठीक उसी मुद्रा में सिंह सिन्धु सभ्यता के बर्तनों पर भी मिलता है (चित्र–17)।

सिन्धु सभ्यता में हाथी का जो शिल्पांकन मिलता है, वही हाथी का शिल्पांकन मौर्यकाल में भी मिलता है (चित्र–18)। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि सिंह और हाथी की मूर्तियाँ जब बनेंगी तो एक जैसी ही बनेंगी। किन्तु ऐसा नहीं है—सिंह की मुद्राएँ भिन्न-भिन्न होती हैं, और उसके बैठने का ढंग भी अलग-अलग होता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता के जो लिपि-चिह्न हैं, वे सम्राट अशोक की लिपि के पूर्वरूप प्रतीत होते हैं। इसमें दस लिपि-चिह्नों के साथ दक्षिण के पाँच लिपि-चिह्न—कुल 15 लिपि-चिह्न—सिन्धु घाटी सभ्यता से पूर्णतः मेल खाते हैं (चित्र–19) (भोलानाथ तिवारी का भाषाविज्ञान)। जिन्हें इतिहासकार ब्राह्मी लिपि कहते हैं, किन्तु सम्राट अशोक ने स्वयं 'धम्मलिपि' लिखवाई थी।

सिन्धु घाटी सभ्यता का अध्ययन करते समय कूबड़ वाला वृषभ भी दिखाई पड़ता है (चित्र–20)। इसी प्रकार बड़े पैमाने पर कूबड़ वाले वृषभ के सिक्के नाग-राजाओं ने भी चलाए (चित्र–21)। क्योंकि संस्कृति समाप्त नहीं होती और परम्परा कभी मिटती नहीं; अतः यह सब उसी का प्रमाण है।

सिन्धुघाटी सभ्यता में प्राप्त एक मुहर (सील) में हम देखते हैं कि एक पुरुष योग-साधना में बैठा है। उसके अगल-बगल कुछ जानवर दिखाई दे रहे हैं। सम्भवतः इन्हीं जानवरों को देखकर उसका नाम 'पशुपति' रख दिया गया है—कोई सामान्य रूप से ऐसा ही सोच सकता है। किन्तु नाम रखने वाले को यह ज्ञात था कि यह नाम हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति में आराध्य देवता शिव से जुड़ा हुआ है (चित्र–22)।

इस प्रचलित मुहर, जिसे शिव से सम्बन्धित बताया जाता है, उसे ध्यानपूर्वक देखें और भगवान शिव की छवि से तुलना करें। उस मुहर में जो साधनारत पुरुष है, वह भयमुक्त दिखाई देता है (चित्र–23)।

उसे पशु-पक्षियों का कोई भय नहीं है। किन्तु भगवान शिव के हाथ में सदैव त्रिशूल होता है। शिव के कमर में मृगछाला होती है और वे बाघ की खाल पर बैठते हैं। परन्तु उस मुहर (सील) में जो साधनारत पुरुष है, वह एकदम साधारण है—न वह बाघ की खाल पर बैठा है, न उसके हाथ में त्रिशूल है, न डमरु है, और न ही उसके पास नन्दी बैल है, जैसा कि शिव के साथ देखा जाता है। इसके विपरीत, उसके चारों ओर विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु उपस्थित हैं।

शिव के गले में सर्प होता है, परन्तु उस साधनारत पुरुष में ऐसा नहीं है। शिव के मस्तक पर चन्द्रमा होता है और वहाँ से गंगा का उद्गम बताया जाता है; वे कैलास पर विराजमान रहते हैं। जबकि वह साधनारत पुरुष वन में स्थित है, और यह विचारणीय है कि पहाड़ पर इतने जीव-जंतु कैसे एकत्र हो सकते हैं।

अतः यह साधनारत पुरुष वन में उसी परम्परा का पूर्वज प्रतीत होता है, जिसके अन्तर्गत बौद्ध परम्परा आती है। अब यदि बौद्ध साधकों के चित्र को ध्यान से देखें, तो उनके चारों ओर भी इसी प्रकार के जीव-जंतु दिखाई देते हैं। वे भी साधनारत होते हैं और उनके पास कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं होता। इससे यह कहा जा सकता है कि सम्यक संस्कृति भयमुक्त होती है और साधना में स्थित रहती है (चित्र–24)।

अब इस साधनारत पुरुष के मस्तक पर जो चिह्न दिखाई दे रहा है, उसे कुछ लोगों ने त्रिशूल बताया है। किन्तु यह त्रिशूल नहीं, बल्कि त्रिरत्न का प्रतीक है। यह त्रिरत्न साँची के स्तूप में भी देखने को मिलता है। पिपरहवा स्तूप में भगवान बुद्ध के अस्थियों के साथ भी यह त्रिरत्न प्राप्त हुआ है। तथा यही त्रिरत्न साँची स्तूप में भी मिलता है (चित्र–25)।

जिस स्वस्तिक चिन्ह को हम पहचानते हैं, वह भी पिपरहवा स्तूप में भगवान बुद्ध के अस्थियों के साथ स्वर्ण-पत्र (डिस्क) पर अंकित मिला है। भगवान बुद्ध के पदचिह्नों में भी यह त्रिरत्न और स्वस्तिक चिन्ह अंकित हैं (चित्र–26)।

इसी सिन्धु सभ्यता में एक और मूर्ति प्राप्त हुई है। इस मूर्ति के ललाट पर आकर्षक बिंदीयुक्त पट्टीनुमा मुकुट दिखाई देता है। यह बिंदी भगवान बुद्ध के मस्तक पर भी देखने को मिलती है। यहाँ तक कि सिन्धु घाटी से प्राप्त इस मूर्ति के वस्त्र-धारण का ढंग भी बुद्ध और उनके अनुयायियों के वस्त्र पहनने के तरीके से मेल खाता है (चित्र–27)।

जब भगवान शिव का सबसे प्राचीन मन्दिर माना जाता है—जो 8वीं से 9वीं शताब्दी के बीच निर्मित कैलास मन्दिर है—तो उसमें भी इस प्रकार का चित्र नहीं मिलता। और काफी समय बाद भगवान शिव की मूर्तियाँ विकसित रूप में दिखाई देती हैं। भगवान तथागत बुद्ध का समय लगभग 2500 वर्ष पूर्व का माना जाता है; अतः यह विचार करना उचित है कि सिन्धु सभ्यता में योग-मुद्रा में बैठे जो साधनारत पुरुष की मुहर (सील) प्राप्त हुई है, उसकी तुलना की जाए। वह बौद्ध साधकों और उनके अनुयायियों से अधिक साम्य रखती है।

तब प्रश्न उठता है कि ऐसी कौन-सी विचारधारा उत्पन्न हुई, जिसके कारण अपनी ही संस्कृति, जो अधिक साम्य रखती है, उसे उपेक्षित कर दिया गया, और जो साम्य नहीं रखती, उसे जबरदस्ती स्थापित करने का प्रयास किया गया? क्या केवल नाम बदल देने से यह सम्भव हो गया?

अब महेन्जोदड़ो के उस स्तूप को देखिए, जिसके समीप एक जलाशय (तरणताल) है, जिसे इतिहासकारों ने स्नानागार कहा है। ठीक इसी प्रकार वैशाली में भी स्तूप के साथ जलाशय अथवा स्नानागार पाया जाता है। क्या हम यह नहीं कह सकते कि ये सभी बौद्ध सभ्यता के ही प्रतीक हैं और हमें कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है (चित्र–28)

उपसंहार

1826 में मैसन हड़प्पा स्थल की खुदाई का निरीक्षण कर रहे थे। अचानक उनकी दृष्टि एक स्थान पर ठहर गई। उन्होंने उसका अच्छी तरह निरीक्षण किया और तमाम साक्ष्यों के आधार पर इतिहास में यह दर्ज किया कि यह एक बौद्ध स्तूप है। इसके पश्चात् 1831 में बैलेंस ने भी अपने निरीक्षण और अनुसंधान में हड़प्पा सभ्यता में बौद्ध स्तूप पाए जाने की बात दर्ज की। 1853 में कनिंघम ने अपने अनुसंधान के दौरान हड़प्पा और बौद्ध काल के बीच सम्बन्ध होने की सम्भावना व्यक्त की। 1922 में राखाल दास बन्दोपाध्याय ने भी बौद्ध स्तूपों की खुदाई की, और वहाँ से भी सिन्धु सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए। अर्थात् यह स्पष्ट होता है कि सिन्धु सभ्यता के पश्चात् उसी परम्परा को बौद्ध सभ्यता ने आगे बढ़ाया।

वेदों को बुद्ध से प्राचीन सिद्ध करने के लिए एक और दावा किया जाता है कि उनमें सरस्वती नदी का वर्णन है, जो लगभग ढाई हजार से तीन हजार वर्ष पूर्व लुप्त हो गई। इस आधार पर वेदों को प्राचीन सिद्ध किया जाता है। इस प्रकार के मत रखने वालों ने सरकार पर यह दबाव डाला कि जैसे बौद्ध ग्रन्थों में फाहियान और ह्वेनसांग के विवरणों के आधार पर खुदाई करने पर बौद्ध प्रमाण प्राप्त हुए, वैसे ही वेदों में वर्णित सरस्वती नदी के प्रमाण खोजने के लिए भी खुदाई की जाए।

इस उद्देश्य से विभिन्न ग्रन्थों के आधार पर क्षेत्र चिन्हित किया गया और हरियाणा के यमुनानगर जिले की शिवालिक पर्वत -श्रृंखला की तलहटी को 'आदिबद्री' के नाम से प्रचारित किया गया। वहाँ तीन स्थानों—एबीआर-1, एबीआर-2, एबीआर-3—पर खुदाई की गई। खुदाई के परिणाम देखकर अधिकारियों के हाथ-पाँव फूल गए, क्योंकि एक स्थान ही नहीं, बल्कि तीनों स्थानों पर बौद्ध सभ्यता के विशाल प्रमाण—बौद्ध विहार, बौद्ध स्तूप, बुद्ध की मूर्तियाँ, दाँतों के अवशेष, हड्डियाँ आदि—मिलने लगे।

आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के डॉ. संजय कुमार मंजू ने बताया कि आदिबद्री मूलतः बौद्ध क्षेत्र है। लगभग एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में अनेक छोटे-बड़े बौद्ध स्तूप विद्यमान हैं। प्रत्येक बार की भाँति इस बार भी वेदों के प्रत्यक्ष पुरातात्त्विक प्रमाण प्राप्त नहीं हुए।

सिन्धु सभ्यता की खुदाई से प्राप्त जिस मूर्ति को हम 'पुरोहित-राजा' की मूर्ति कहते हैं, तथा उसी सिन्धुघाटी में प्राप्त एक मुहर (सील) में एक पुरुष को योग-साधना करते हुए दर्शाया गया है। 'पुरोहित-राजा' की मूर्ति में भी उसकी आँखें अर्ध-उन्मीलित हैं, जो योग-मुद्रा को दर्शाती हैं। इसी प्रकार मुहर में प्राप्त 'पशुपति' का शिल्पांकन भी साधना में लीन दिखाई देता है।

इस प्रकार यह संस्कृति और दर्शन ईसा पूर्व लगभग 3000 वर्ष से—चतुर्थ बुद्ध दीपंकर बुद्ध से लेकर तथागत बुद्ध तक—अट्ठाईस बुद्धों की परम्परा में विकसित होता हुआ, सम्राट अशोक के काल में और अधिक प्रसारित हुआ। तत्पश्चात् शुङ्ग, कुषाण, गुप्तवंस होकर हजारों वर्षों बाद भी दक्षिण भारत में सातवाहन राजवंश के समय तथा आगे बंगाल में द्वादश शताब्दी में राजा धर्मपाल के शासनकाल तक यही परम्परा निरन्तर चलती रही।

MEDHĀMANTHAN ISSN : 3139-7840
A Premier Peer-Reviewed, Open-Access, Bimonthly, International Online Research Journal
Dedicated to the fields of Arts, Humanities and Social Sciences
Adhering to UGC Guidelines and Quality Mandates
Volume: 1, Issue: 2 (JUL - AUG) 2026

अतः हमारे पास उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि योग का इतिहास आज से लगभग 5000 वर्ष प्राचीन है। यह संस्कृति भगवान तथागत बुद्ध में पूर्णता प्राप्त करती है, और आचार्य पतंजलि द्वारा रचित 'योगसूत्र' के रूप में व्यवस्थित होती है। साथ ही, योग की यह परम्परा वेदों से लेकर आज तक निरन्तर प्रवाहित होती आ रही है।

Endnotes

1. ऋग्वेद, 5.81.1
2. ऋग्वेद, 10.136.2
3. महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय 304, श्लोक 12 (12.304)
4. कठ १.३.१३
5. कठ २.३.११
6. कठ 2.3.14
7. हठयोगदीपिका 1.4
8. श्वेताश्वतर उपनिषद, 2.8-2.15
9. ह्वेनसांग की भारत यात्रा, सम्पा. शांन्ति स्वरूप वौद्ध, पृ.26
10. ह्वेनसांग की भारत यात्रा, सम्पा. शांन्ति स्वरूप वौद्ध, पृ. 25
11. कोरागमव बुध, कपुसन बुध
12. बोधगया
13. सारनाथ
14. बोधगया, सारनाथ, लुम्विनी श्रावस्ती, कुसुमपुर(पाटलीपुत्र), सोनीपत(हरियाणा), कुशीनगर,..........ब्रह्मगिरि का लघु शिलालेख, मास्की का लघु शिलालेख, गवीमठ का लघु शिलालेख, गुजर्रा की लघु शिलालेख इत्यादि ।
15. बोधगया
16. सुजाता स्तूप, बकरौर (सेनानी ग्राम), विहार ।
17. महापरिनिर्वाण स्तुप, कुशीनगर, उत्तरप्रदेश ।
18. बुध का जन्मस्थान, अधुना नेपाल, सम्राट असोक ने स्तूप बनाया था और पिलर लगवाए थे ।
19. श्रावस्ती का जेतवन, उत्तरप्रदेश ।
20. श्रावस्ती का जेतवन, उत्तरप्रदेश ।
21. फाहियान की भारतयात्रा, सम्पा. शांति स्वरूप वौद्ध, इक्कीसवाँ खंड, पृ. 35
22. फाहियान की भारतयात्रा, सम्पा. शांति स्वरूप वौद्ध, इक्कीसवाँ खंड, पृ. 35, कोरागमन बुध का जन्मस्थान।
23. बुध का जन्मस्थान, अधुना नेपाल, सम्राट असोक ने स्तूप बनाया था और पिलर लगवाए थे ।
24. रुम्मिनदेई का लघु स्तम्तलेख ।
25. सनति, जिसको कंगनहल्लि भी कहा जाता है, वहाँ से मिली हुई कोणागमन बुद्ध की मूर्ति—मूर्ति में धम्मलिपि में "कोणागमन" लिखा है। जब हम तथागत बुद्ध की मूर्ति देखते हैं, तो मूर्ति के नीचे वेदियों में हिरण देखते हैं, लेकिन इस मूर्ति के नीचे वेदियों में हिरण नहीं है। इसलिए यह जो बुद्ध हैं, तथागत बुद्ध से अलग हैं।
26. भरत स्तूप पर किए हुए शिल्पांकन फिलहाल यह कलकाता म्यूजियम में है। इस शिल्पांकन का विषय यह है कि, कोणागमन बुद्ध के बोधि वृक्ष की पूजा हो रही है। यहाँ ऊपर में लिखा हुआ है "भगवत कोणागमनस बोधि"। यह बोधि वृक्ष पीपल का नहीं, वह डुम्बर था। पीपल तो तथागत बुद्ध का बोधि वृक्ष है।
27. क्योंकि हम जानते हैं कि, किसी स्थान को एकाधिक नामों से जाना जाता है। साथ ही समय के साथ स्थानों के नाम भी कभी-कभी बदलते रहते हैं। जैसे छोटानागपुर को पहले चुटिया नागपुर लिखा हुआ है।
28. असोक के स्तम्भ में लिखा हुआ है, बुद्धस 'कोनाकमनस'। सनति की मूर्ति एवं भरत के स्तूप पर किए गए शिल्पांकन में हम पढ़ते हैं 'कोणागमनस' और यहाँ हम नेपाल में पढ़ते हैं 'कोणाकमनस'। माने जो 'ग' है, वह 'क' में बदल गया है। लेकिन क्यों? लिपिकार ने गलती की है! नहीं, यह पैशाची प्राकृत की विशेषता है। पैशाची प्राकृत की विशेषता पश्चिमोत्तर भारत (जैसे—काश्मीर) में तो थी ही,

MEDHĀMANTHAN ISSN : 3139-7840
A Premier Peer-Reviewed, Open-Access, Bimonthly, International Online Research Journal
Dedicated to the fields of Arts, Humanities and Social Sciences
Adhering to UGC Guidelines and Quality Mandates
Volume: 1, Issue: 2 (JUL - AUG) 2026

साथ में उससे पर्वतीय क्षेत्र नेपाल भी प्रभावित था। सम्राट अशोक के शिलालेखों की जो ध्वनियाँ हैं, वे क्षेत्र विशेष पर रूपांतरण करती हैं, जैसे—मध्यदेश, पूर्वी प्रदेश, दक्षिण, पश्चिमोत्तर। पैशाची प्राकृत में हम देखते हैं कि, दो स्वरों के बीच में आने वाले पर्श वर्गों के

Dr. Pintu Raul | *State Aided College Teacher, Dept. of Sanskrit,*
Sitananda College, Nandigram, Purba Medinipur, West Bengal, India.
Email: raulpintu@gmail.com
Page No: 10-20

तीसरे और चौथे घोष व्यंजन इसमें क्रमशः पहले और दूसरे अर्थात् अघोष हो गए—गगन > गकन, मेघः > मेखो, दामोदर > तामोतर, राजा > राचा।

29. रुम्मिनदेई का लघु स्तम्तलेख ।
30. Kshemavati (Gotihawa), Archaeology of Buddhist Sites in Napalese Tarai. Unesco Site: https://en.unesco.org/silkroad/sites/default/files/knowledge-bank-article/archaeology_of_buddhist_sites_in_nepalese_tarai.pdf (10pm, On 07/04/2026)
31. Prominent early Chinese traeler Fa-hsien (339-413 AD) and Hsuan Tsang (636 AD) have descried, in their travel accounts, the existence of Gotihawa as the birthplace of Krakuchhanda Buddha and the erection of a stone pillar, bearing a lion capital, by Asoka (King).
32. निग्लीहवा स्तम्भलेख
33. Regveda 1/28/1, 1/52/6, 1/95/8-9, 1/96/6, 1/116/9/, 1/141/3, 1/137/2, 1/169/6, 1/161/13, 10/61/12, 7/78/5, 7/9/4.
34. Regveda 1/186/5, 2/2/3, 2/31/6, 3/39/3, 3/55/7, 3/61/7, 4/1/11, 4/2/25, 4/17/14, 4/19/3-4, 4/55/6, 5/41/6, 6/49/14, 6/50/14, 7/6/7, 7/9/4, 7/34/16, 7/56/14, 7/78/5, 8/66/5, 10/8/3, 10/47/3, 10/61/12, 10/64/4, 10/66/11, 10/73/8, 10/77/4, 10/92/12, 10/93/4, 10/108/7, 10/111/8, 10/135/6, 10/139/3, 10/171/3.
35. Regveda 8/40/5
36. Regveda 3/29/3, 7/2/1, 1/24/7, 3/29/3,
37. Regveda 10/149/5
38. मियामी आमेरिका
39. https://tourism.bihar.gov.in/en/destinations/west-champaran/lauria-nandangarh (10pm, On 07/04/2026)
40. https://eastchamparan.nic.in/hi/tourist-place/%E0%A4%85%E0%A4%B6%E0%A5%8B%E0%A4%95-%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%82%E0%A4%AD-%E0%A4%B2%E0%A5%8C%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE-%E0%A4%85%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C/ (10pm, On 07/04/2026)
41. सम्राट असोक के स्तम्भ के साथ उसी का लेख- देवानंपियेन पियदसिन लाजिन चोदवसाभिसिटेन बुधस कोनाकमनस थुबे दुतियं बढिते (वीसतिव) साभिसितेन च अतन आगाच महीयिते (सिलाथमे च उस) पापिते ।
42. Kshemavati (Gotihawa), Archaeology of Buddhist Sites in Napalese Tarai. Unesco Site: https://en.unesco.org/silkroad/sites/default/files/knowledge-bank-article/archaeology_of_buddhist_sites_in_nepalese_tarai.pdf (10pm, On 07/04/2026)

43. Prominent early Chinese traeler Fa-hsien (339-413 AD) and Hsuan Tsang (636 AD) have descried, in their travel accounts, the existence of Gotihawa as the birthplace of Krakuchhanda Buddha and the erection of a stone pillar, bearing a lion capital, by Asoka (King).
44. फाहियान की भारत यात्रा, सम्पा. शांति स्वरूप वौद्ध, पृ. 23
45. सिख धर्म के 10 गुरुओं के नाम गुरु ग्रंथ साहिब तथा कई सिख इतिहास और धर्मग्रंथों में उल्लिखित हैं। ये गुरु हैं—गुरु नानक देव, गुरु अंगद देव, गुरु अमर दास, गुरु राम दास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोबिंद, गुरु हर राय, गुरु हरकिशन, गुरु तेग बहादुर और गुरु गोबिंद सिंह।
46. https://hindi.news18.com/news/ajab-gajab/treasure-of-2000-years-old-coins-found-buried-under-buddhist-shrine-in-pakistan-khajana-mila-7868623.html (10pm, On 07/04/2026)
47. https://www.tv9hindi.com/knowledge/how-bhagwan-buddha-pendant-found-in-mohenjo-daro-pakistan-sindh-au114-1385421.html
48. मोहेंजोदड़ो से प्राप्त बुद्ध पेंडेंट का कार्बन डेटिंग होना चाहिए। कई लोग अनावश्यक हो-हल्ला मचा रहे हैं। बुद्ध पेंडेंट धातु का बना है। इसका कार्बन डेटिंग नहीं हो सकता है। कम से कम, नहीं जानने पर चुप तो रहिए। कार्बन डेटिंग उसी वस्तु का होता है, जिसमें कार्बन हो, जैसे—हड्डी, लकड़ी, चारकोल आदि।
49. फाहियान की भारतयात्रा, सम्पा. शांति स्वरूप वौद्ध, पृ. 28
50. फाहियान के वर्णन में 'नागार क्षेत्र' पेशावर (पुरुषपुर) को कहा गया है, जो कि एक शक्तिशाली बौद्ध मठ वाला क्षेत्र था। यह क्षेत्र आज के पाकिस्तान और भारत की सीमा के पास, गांधार क्षेत्र के हिस्से के रूप में स्थित था।
51. फाहियान के वर्णन में 'नागार क्षेत्र' पेशावर (पुरुषपुर) को कहा गया है, जो कि एक शक्तिशाली बौद्ध मठ वाला क्षेत्र था। यह क्षेत्र आज के पाकिस्तान और भारत की सीमा के पास, गांधार क्षेत्र के हिस्से के रूप में स्थित था।

Bibliography

- Cunningham, A. (1854). *The Bhilsa topes; or, Buddhist monuments of Central India*. Smith, Elder and Co.
- Cunningham, A. (1877). *Corpus inscriptionum Indicarum: Vol. 1. Inscriptions of Asoka*. Office of the Superintendent of Government Printing.
- Cunningham, A. (1891). *Ancient India from the earliest times down to the seventh century A.D.* B. Quaritch.
- Cunningham, A. (1871). *The ancient geography of India: The Buddhist period, including the campaigns of Alexander, and the travels of Hwen-Thsang*. Trübner and Co.
- इत्सिंग. (2020). *इत्सिंग की भारत यात्रा* (सन्तराम वी. ए., सम्पा.). सम्यक प्रकाशन।
- *जातक* (भदन्त आनन्द कौसल्यायन, सम्पा.). (n.d.). हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
- तिवारी, भोलानाथ. (1995–1996). *भाषा विज्ञान.* किताब महल। (मूल कृति प्रकाशित 1951)
- *बुद्ध की तलाश में: चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा* (शान्ति स्वरूप बौद्ध, सम्पा.). (2019). सम्यक प्रकाशन।
- *बुद्ध की तलाश में: चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान की भारत यात्रा* (शान्ति स्वरूप बौद्ध, सम्पा.; तृतीय संस्करण). (2022). सम्यक प्रकाशन।
- विश्वास, स्वपन कुमार. (n.d.). *बौद्ध धर्म: मोहनजोदड़ो-हड़प्पा नगरों का धर्म*
- सिंह, राजेन्द्र प्रसाद. (2020). *प्राचीन भारत का बौद्ध इतिहास।*

MEDHĀMANTHAN ISSN : 3139-7840
A Premier Peer-Reviewed, Open-Access, Bimonthly, International Online Research Journal
Dedicated to the fields of Arts, Humanities and Social Sciences
Adhering to UGC Guidelines and Quality Mandates
Volume: 1, Issue: 2 (JUL - AUG) 2026

चित्र समूह

1.

पीपल के पत्ते बने हुए बर्तन

2.

पीपल के पत्ते बने हुए सील

3.

पीपल के पत्ते बने हुए कूए

4.

आठ कोण विशिष्ट कुआ

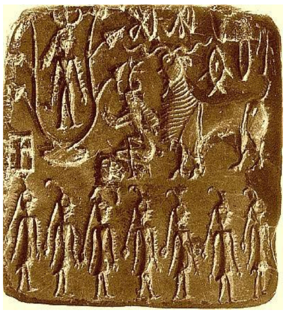

पीपल पत्ते की महत्त्व

5.

योगी पुरूष

6.

दीपंकर बुध का शिल्पांकन

7.

कुषाण काल के प्राप्त हुए सीके

8.

बुद्ध का मिला हुआ पेंडेन्ट

9.

पंजाब के सिंहल में कुषाणकालीन स्तूप चि. 1

10.

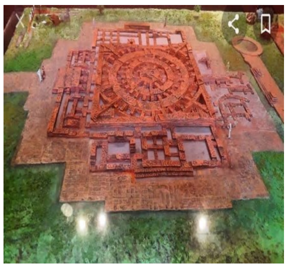

पंजाब के सिंहल में कुषाणकालीन स्तूप, चि.2

11.

पंजाब के सिंहल में कुषाणकालीन स्तूप चि.3

12.

धोलावीरा सिंधु घाटी सभ्यता, चि. 1

13.

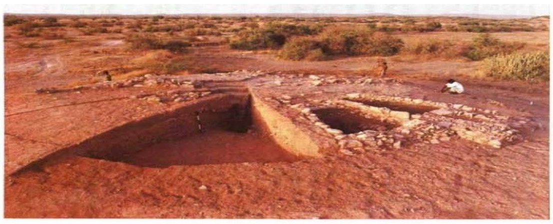

Dholavira : partially excavated hemispherical tumulus in the cemetery

धोलावीरा सिंधु घाटी सभ्यता, चि.2

14.

सील में छह तिलिया बने हुए वृत्त

MEDHĀMANTHAN ISSN : 3139-7840
A Premier Peer-Reviewed, Open-Access, Bimonthly, International Online Research Journal
Dedicated to the fields of Arts, Humanities and Social Sciences
Adhering to UGC Guidelines and Quality Mandates
Volume: 1, Issue: 2 (JUL - AUG) 2026

15.

BUDDHIST STUPA OR INDUS TEMPLE?

MOHENJO DARO, PAKISTAN— On the highest mound here rises a ruined dome—the most dramatic structure in the center of the largest Indus city, set in a courtyard once surrounded by buildings. But since the 1920s, archaeologists have considered the dome to be a much later Buddhist stupa ringed by cells of monks, built using Indus bricks 2 millennia after the city's demise. Now, University of Naples archaeologist Giovanni Verardi says that this magnificent structure may actually be a monument from Indus times. If he's right, it will force Indus scholars to rethink the religious and political nature of the civilization, long thought to lack grand temples and palaces (see main text).

The original excavators assumed the dome was Buddhist in large part because buried coins dating to the Kushan Empire of the 2nd and 3rd century C.E. were found at the site. They did note that the stupa was not aligned in typical fashion, that the plinth was of unusual height, and that certain pottery shards predated the Kushan. Verardi, who carefully examined both the site and the original archaeological reports, argues that the coins likely were buried later and therefore are of little value in dating the structures. Based on preliminary excavation of the mound, he even theorizes that the original structure may have been a series of platforms, perhaps similar to the Ur ziggurat in Mesopotamia built around 2100 B.C., near the height of Indus urban life. Such platforms were common from Mesopotamia to Turkmenistan during that era, but none have been clearly identified in the Indus region.

Other scholars are wary of the ziggurat idea but agree that the evidence supporting a stupa is slim. "I'm quite sure Verardi is right," says Michael Jansen of RWTH Aachen University in Germany, who has worked here for years. "We did a very careful survey of the area around the citadel and found not a single Kushan shard." Jansen also notes that Buddhist monks' cells of that period are not usually arranged around a stupa. "What's needed now is careful restudy," says Jansen, who hopes to excavate at the site. After 2 decades, restoration work has at last stabilized the crumbling brick, and officials plan to reopen excavations (see p. 1284). "If it is indeed [Indus], then this will turn our interpretations upside down."

—A.L

1280 6 JUNE 2008 VOL 320 SCIE

आमेरिका के सायेन्स जार्नि पत्रिका

16.

सिंधु घाटी में प्राप्त म्रूर्ति

तथागत बुध का मूर्ति

17.

सिंधु घाटी सभ्यता के बर्तनों पर और सम्राट अशोक के स्तम्भ पर जो सिंह की शैली।

18.

सम्राट अशोक के स्तम्भ पर और सिंधु घाटी सभ्यता की सील में हाथी की शैली।

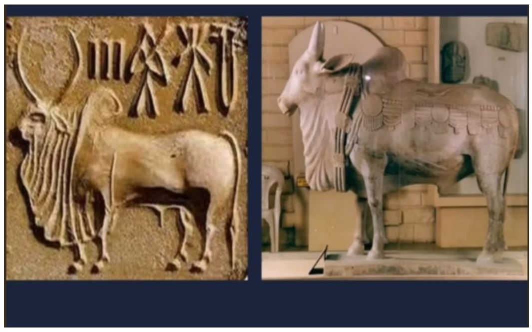

सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त वृषभ और 1982 में अमरावती की खुदाई में प्राप्त वृषभ।

19.

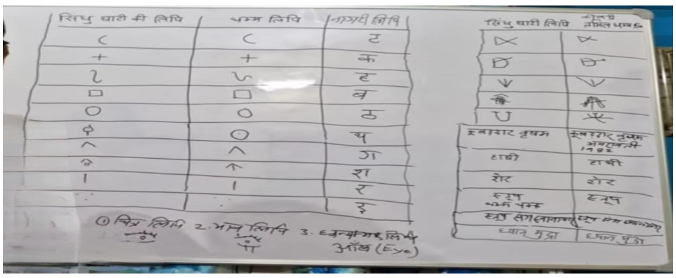

इसमें दस लिपि-चिह्नों के साथ दक्षिण के पाँच लिपि-चिह्न—कुल 15 लिपि-चिह्न—सिंधु घाटी सभ्यता से एकदम मेल खाते हैं।

MEDHĀMANTHAN ISSN : 3139-7840
A Premier Peer-Reviewed, Open-Access, Bimonthly, International Online Research Journal
Dedicated to the fields of Arts, Humanities and Social Sciences
Adhering to UGC Guidelines and Quality Mandates
Volume: 1, Issue: 2 (JUL - AUG) 2026

20. 21. 22. 23.

मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त सील में और नाग राजवंश के सिक्कों में अंकित वृषभ। पशु-पक्षियों के साथ जंगल में साधनारत पुरुष एवं पहाड़ पर बैठे भगवान शिव।

24. 25.

जंगल में साधनारत पुरुष एवं विपश्यना अवस्था में भगवान बुद्ध।

पिपरहवा स्तूप में भगवान बुद्ध की अस्थियों के साथ प्राप्त त्रिरत्न, एवं साँची स्तूप में त्रिरत्न का शिल्पांकन।

26

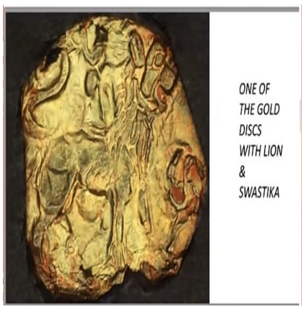

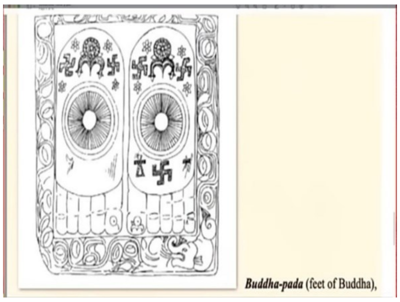

पिपरहवा स्तूप में भगवान बुद्ध की अस्थियों के साथ प्राप्त सोने की डिस्क पर अंकित स्वस्तिक चिन्ह, भगवान बुद्ध के पदचिह्न में अंकित स्वस्तिक चिन्ह के साथ बने हुए त्रिरत्न एवं सिंधु घाटी में प्राप्त स्वस्तिक।

27. 28.

सिंधु घाटी में प्राप्त मूर्ति

तथागत बुध का चित्र

महेंजोदड़ो स्तूप के साथ तरणताल और वैशाली के स्तूप के साथ तरणताल।